भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्त्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

प्रथमः पाठः

वेदामृतम्

भारतीय वैदिक वाङ्मय संपूर्ण विश्व का प्राचीनतम वाङ्मय होने के साथ मनुष्य की अंतश्चेतना से फूटी उदात्त कविता का भी प्रथम निदर्शन है। वैदिक काव्य में विश्वशान्ति, विश्वबन्धुत्व, लोकतान्त्रिक मूल्य, निर्भयता तथा राष्ट्रप्रेम का सन्देश भरा पड़ा है जो आज के वातावरण में पहले से भी अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है।

प्रस्तुत पाठ में वैदिक काव्य का अमृततत्व ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद से संकलित किया गया है। इन कविताओं में अत्यन्त उदात्त एवं अनुकरणीय आदर्श विद्यमान है।

सङ्गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते॥1॥ (ऋ. 10-191-2)

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥2॥ (ऋ. 10-191-4)

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥3॥ (ऋ. 1-90-7)

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं
तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमञ्ज्योतिषां ज्योतिरेकं
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥4॥ (यजु. 34.1)

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम्।
शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतम्
अदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥5॥ (यजु. 36-24)

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसम्
नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां
ध्रुवेव धेनुरनुपस्फुरन्ती॥6॥ (*अथर्ववेदः पृथिवीसूक्तम् 12.1.45*)

शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

सङ्गच्छध्वम्	–	सङ्गताः संभूताः भवत (सम् पूर्वक गम् धातु आत्मनेपद लोट् लकार म.पु., बहु.व.), साथ चलें।
संवदध्वम्	–	परस्परं विरोधं परित्यज्य एकविधमेव वाक्यं ब्रूत इति, परस्पर विरोध छोड़कर समान स्वर से एक समान बोलें।
वः (युष्माकम्)	–	तुम्हारा।
मनांसि	–	मन।
संजानताम्	–	समानमेकरूपमेवार्थम् अवगच्छन्तु, समान रूप से अर्थ बोध करें।
पूर्वे देवाः	–	पुरातनाः देवाः, पूर्वकाल के देवगण।
सञ्जानानाः	–	ऐकमत्यं प्राप्ताः, एकमत होकर।
भागम् उपासते	–	हवि के भाग को स्वीकार करते हैं।
आकूतिः	–	संकल्पः, अध्यवसायः, संकल्प।
समाना	–	समानानि, एकविधानि, समान।
सुसह	–	शोभनं साहित्यम्, संगति।
असति	–	भवतु (तुम्हारी सुन्दर संगति हो जाए)।
मधु	–	माधुर्योपेतम्, माधुर्य से भरी।
ऋतायते	–	ऋतं (यज्ञं) आत्मनः इच्छते यजमानाय, अपने लिए यज्ञ की कामना करने वाले यजमान के लिए।
सिन्धवः	–	नद्यः, समुद्राः वा, नदियाँ अथवा समुद्र।
ओषधीः	–	फलपाकान्ता ओषधयः, फल के पकने पर जो पौधे नष्ट हो जाते हैं, उन्हें ओषधि कहते हैं।
जाग्रतः	–	जागते हुए के।
दूरम् उदैति	–	दूर भाग जाता है।
तदु दैवम् (मनः)	–	तद् दिव्यज्ञानयुक्तं मनः, वही दिव्य विज्ञान युक्त मन।
ज्योतिषाम्	–	इन्द्रियाणाम्, विषयों का प्रकाशन करने वाली इन्द्रियों में।
दूरं गमम्	–	सर्वाधिक दूर तक पहुँचने वाली, एकमात्र प्रकाशक।

शिवसंकल्पम्	–	शिवा: संकल्पा: यस्य तत्, मंगलमय, कल्याणकारी विचारवाला।
देवहितम्	–	देवै: स्थापितम्, देवताओं द्वारा स्थापित।
शुक्रम्	–	दिव्य, चमकीला।
चक्षुः	–	नेत्र, सूर्य।
पुरस्तात्	–	पूर्वदिशायाम्, पूर्व दिशा में समक्ष।
उच्चरत्	–	उदित: जात:, उदय हुआ है, निकल रहा है।
शरदः	–	वर्ष।
शतम्	–	सौ (जीवित रहें)।
अदीनाः	–	न दीना:, दैन्यात् रहिता:, दीनता से रहित।
भूयश्च शरदः शतात्	–	पुन: पुन: शतात् शरद: एवमेव भवेत्, बार-बार सौ वर्षों से भी अधिक यही स्थिति बनी रहे।
बिभ्रती	–	धारण करती हुई।
विवाचसम्	–	विभिन्न भाषा वाले।
यथौकसम्	–	ओक: अनतिक्रम्य (हर घर-घर के अनुसार)।
दुहाम्	–	दुहावे, बहा दे।
अनुपस्फुरन्ती	–	कम्पन रहित।

अभ्यास:

1. संस्कृतभाषया उत्तरत

(क) सङ्गच्छध्वम् इति मन्त्र: कस्मात् वेदात् संकलित:?

(ख) अस्माकम् आकूति: कीदृशी स्यात्?

(ग) अत्र मन्त्रे 'यजमानाय' इति शब्दस्य स्थाने क: शब्द: प्रयुक्त:?

(घ) अस्मभ्यम् इति कस्य शब्दस्य अर्थ:?

(ङ) ज्योतिषां ज्योति: क: कथ्यते?

(च) माध्वी: का: सन्तु?

(छ) पृथिवीसूक्तम् कस्मिन् वेदे विद्यते?

2. अधोलिखितक्रियापदै: सह कर्तृपदानि योजयत

(क) .... सञ्जानाना: उपासते।

(ख) .... मधु क्षरन्ति।

(ग) मे .... शिवसंकल्पम् अस्तु।

(घ) .... शतं शरद:शृणुयाम।

3. **शुद्धं विलोमपदं योजयत**

जाग्रतः	वः
नः	अदीनाः
दीनाः	सुप्तस्य

4. **अधोलिखितपदानाम् आशयं हिन्दी-भाषया स्पष्टीकुरुत**

उपासते, सिन्धवः, सवितः, जाग्रतः, पश्येम।

5. (क) वेदे प्रकल्पितस्य समाजस्य आदर्श स्वरूपम् पञ्चवाक्येषु चित्रयत।

(ख) मनसः किं वैशिष्ट्यम्?

6. **पश्येम, श्रृणुयाम, प्रब्रवाम, इति क्रियापदानि केन इन्द्रियेण सम्बद्धानि**

7. **अधोलिखितवैदिकक्रियापदानां स्थाने लौकिकक्रियापदानि लिखित**

असति, उच्चरत्, दुहाम्।

योग्यताविस्तारः

ऋग्वेदः मूलतः ज्ञानकाण्डं कथ्यते तत्र मुख्यतः देवतापरकमन्त्राः सन्ति-यथा अग्निः, इन्द्रः, रुद्रः, सविताप्रभृतयः। कतिपयानि सूक्तानि दार्शनिकानि सन्ति यथा नासदीयसूक्तम्, ज्ञानसूक्तम्, हिरण्यगर्भादिसूक्तम् कतिपयानि सामाजिकसूक्तानि अपि सन्ति येषु धनान्नदानसूक्तम् अक्षसूक्तम् संगठनसूक्तादयः। ऋग्वेदस्य साम्मनस्यसूक्तस्य पल्लवनम् उत्तरवर्तिषु उपनिषदादिशास्त्रेष्वपि उपलभ्यते। यथा- **सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै। तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥ तैत्तिरीय उप॰**

''सङ्गच्छध्वम्'' .... तथा ''समानी'' .... इत्यादिमन्त्राणां भावः गीतिरूपे हिन्द्याम् अपि प्राप्यते। यथा-

(1) प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भाँति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो॥

(2) हों विचार समान सबके चित्र मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हों॥

प्रकृतौ माधुर्यस्य प्रार्थना एवं पारिवारिकमधुरतायाः अर्चनस्य आधारः। अतः अथर्ववेदे एतादृश्यः प्रार्थनाः उपलभ्यन्ते।

अनुव्रतः पिता पुत्रो मात्रा भवतु सम्मनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्ति वाम्॥ *(अथर्व 3.3.2)*

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः
माध्वीर्गावो भवन्तु नः। *(ऋग्वेदः 1.10.08)*

यजुर्वेदः मुख्यतः कर्मकाण्डस्य वेदः अस्ति, परम् अस्मिन् अपि जीवनविषयकाः मन्त्राः उपलब्धाः सन्ति। मनसः

निग्रहणार्थ यजुर्वेदे अनेके मन्त्राः सन्ति। यथा–

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।

यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ (*यजु 34/3*)

यद्यपि ऋग्वेदस्यैव मन्त्राः सामवेदे सन्ति तथापि सामवेदमन्त्रेषु गेयता विद्यते।

अथर्ववेदः विज्ञानकाण्डं मन्यते। अस्मिन् वेदे विविधाः मन्त्राः सन्ति। यथा आयुर्वेदविषयकाः, भौतिकविज्ञानविषयकाः, अर्थशास्त्रविषयकाः व्यवहारशास्त्रविषयकाः तथा च परं राष्ट्रीयभावनायाः दृढीकरणं अस्य वेदस्य वैशिष्ट्यम् अस्ति। अथर्ववेदे पृथ्वी मातृवत् स्पृहणीया निगदिता।

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो

यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।

यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत्

सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु॥ (*अथर्ववेदः 12.1.3*)

ब्रह्मचर्येण राजा राष्ट्रं विरक्षति (*अथर्ववेदः*)